कश्मीर की वेदी पर

प्रकाशवीर शास्त्री

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के जीवन एवं बलिदान पर एक अलभ्य एवं अप्राप्य पुस्तक का पुनःप्रकाशन

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

कश्मीर की वेदी पर

प्रकाशवीर शास्त्री

कायरों ने शेर को मारा, कर पिंजरे में बन्द
बरसों तक इन्सानियत, इस कृत्य पर शरमायेगी।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान
नई दिल्ली

प्राक्कथन

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' के महामन्त्र का बीज यदि बालमन की भूमि में बो दिया जाए और राष्ट्रीयता से ओतप्रोत शिक्षा–दीक्षा एवं परिवेश रूपी खाद, पानी तथा वातावरण की व्यवस्था हो सके तो इसमें कोई दो राय नहीं कि युवा होकर वह वानरी सेना पूरी निष्ठा से राष्ट्र की बहुमुखी सेवा–सुरक्षा में अहम भूमिका निभायेगी।

हम यह जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक पहचान वहाँ के विचार अर्थात् साहित्य से है। तलवार की तुलना में कलम अधिक धारदार है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भी अपनी एक कविता में लिखा है–'कलम आज उनकी जय बोल।' पर कलम उनकी ही जय बोलती है जो मातृभूमि के लिए अपना अनमोल जीवन अर्पित करने को तत्पर रहते हैं।

राष्ट्र के नाम जीवन अर्पण का अर्थ केवल बलिदान ही नहीं है अपितु त्याग और सेवा से परिपूर्ण जीवन भी उसी श्रेणी में है। राष्ट्रीय विचारधारा को लेकर जीना और मरना दो अलग–अलग बातें नहीं हैं, अपितु एक सिक्के के दो पहलू हैं या एक तराजू के दो पलड़े।

राष्ट्र के ऐसे ही सपूतों में उल्लेखनीय नाम है–डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी। डॉ. मुखर्जी प्रखर मेधा के धनी थे। मात्र 33 वर्ष की उम्र में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा उपकुलपति बने और शिक्षा के क्षेत्र में कई उल्लेखनीय प्रयोग किये। शिक्षाविद् तो वे थे ही, राजनीति में भी विशारद थे। उनकी राजनीतिक सूझबूझ और निर्णयशक्ति से प्रभावित होकर महात्मा गाँधी ने पं. नेहरू को सुझाव दिया था कि वे अपने मन्त्रिमण्डल में डॉ. मुखर्जी को अवश्य सम्मिलित करें। उन्हें स्वतन्त्र भारत का प्रथम उद्योगमन्त्री बनाया गया। अपने कार्यकाल में डॉ. मुखर्जी ने भाखरा नांगल डैम (बाँध) परियोजना, भिलाई इस्पात उद्योग, सिन्दरी खाद कारखाना जैसी अनेक महत्त्वपूर्ण योजनाओं को मूर्त्त रूप दिया। इन सबसे बढ़कर उल्लेखनीय है राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए पं. नेहरू–लियाकत अली समझौते के विरोध में मन्त्रिमण्डल से 06 अप्रैल 1950 को त्यागपत्र देना और पूरे जोश के साथ जम्मू–कश्मीर में एक निशान, एक प्रधान और एक विधान की

स्थापना के लिए जनजागरण करना।

इस महान् उद्देश्य के लिए उन्होंने बिना 'परमिट' जम्मू–कश्मीर में प्रवेश की घोषणा की और साहसपूर्वक प्रवेश कर गये। इसके फलस्वरूप जम्मू–कश्मीर की शेख अब्दुल्ला सरकार की पुलिस ने 11 मई 1953 को कश्मीर की सरहद लखनपुर में उन्हें गिरफ्तार कर लिया और श्रीनगर में बन्दी बना दिया जहाँ रहस्यमयी परिस्थिति में 23 जून 1953 को उनकी असामयिक मृत्यु हो गई।

ऐसे वीर सपूत पर राष्ट्रीय चेतना के प्रखर लेखक पं. प्रकाशवीर शास्त्री ने अपनी लेखनी चलाई। उनकी यह कृति 'कश्मीर की वेदी पर' कालजयी साहित्य की शृंखला में महत्त्वपूर्ण 'मील का पत्थर' है।

इस अलभ्य उपहार को पुनःप्रकाशित करते हुए डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान गौरव का अनुभव कर रहा है। पाठक इससे प्रभावी प्रेरणा प्राप्त करेंगे, इसका पूरा विश्वास है।

बाल आपटे
अध्यक्ष, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

अपनी बात

गोरखपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्तप्रचारक और मेरे मित्र अनिलजी के माध्यम से हुई एक बैठक में दीनदयालजी के बारे में चर्चा चली। उसी बैठक में अनायास डॉ. रुद्रदत्त चतुर्वेदीजी ने डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी की एक अलभ्य पुस्तक का जिक्र किया। कौतूहल और औत्सुक्य बढ़ गया। वे घर जाकर जो पुस्तक लाए वह वस्तुतः रोमांचित करनेवाली थी। आर्यसमाज के प्रखर विद्वान्, राष्ट्रीयता से ओतप्रोत उद्‌भट राजनेता और तेजस्वी वक्ता श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने डॉ. मुखर्जी की रहस्यमयी मृत्यु, जिसे सभी ने 'हत्या' निरूपित किया था, से मर्माहत हो तुरन्त ही यह पुस्तक लिख डाली थी।

डॉ. मुखर्जी पर साहित्य के प्रकाशन की नीति के अन्तर्गत यह पुस्तक पुनः प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। पुस्तक मर्मस्पर्शी और भावनापूर्ण है। इसकी भाषा तात्कालिक और 50 के दशक की ही है, जिसमें ज़्यादा परिवर्तन न करते हुए भी यत्र–तत्र कुछ परिष्कार और परिमार्जन किया गया है। यथा 'काश्मीर' को 'कश्मीर' किया है; क्योंकि यही शब्द अब रूढ़ हो गया है।

असन्दिग्ध रूप से इस पुस्तक में अमर बलिदानी डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी की जीवनगाथा को बड़े ही सरल शब्दों में प्रस्तुत किया गया है। हर आयुवर्ग के पाठकों को यह कृति समान रूप से प्रभावित कर पाने में पूर्ण समर्थ है।

पुस्तक पढ़ते हुए हर पाठक रोमांचित हो उठता है। यद्यपि पुस्तक में प्रकाशन वर्ष का उल्लेख नहीं है, परन्तु पं. प्रकाशवीर शास्त्रीजी के आमुख 'कलम रोक कर' से यही विश्वास होता है कि यह पुस्तक 1953 में ही लिखी गई एवं प्रकाशित हुई। वह संस्करण भारतीय जनसंघ, चन्दौसी (उ.प्र.) के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री राममोहन (बी. कॉम.) ने श्रद्धा प्रकाशन, चन्दौसी की ओर से रामाकृष्ण प्रेस, देहली से प्रकाशित–मुद्रित करवाया

था। इसे पुनःप्रकाशन हेतु उपलब्ध कराने का श्रेय शास्त्रीजी के अनन्य स्नेहभाजन डॉ. रुद्रदत्त चतुर्वेदी (गोरखपुर) को है। इस सारस्वत सहयोग के लिए उन्हें साधुवाद!

इस पुस्तक की पुनःप्रस्तुति और भाषा–परिमार्जन में श्री सन्दीपकुमार आचार्य ने श्लाघनीय रूप से कार्य किया है।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये !

तरुण विजय

मानद् निदेशक, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

अनुक्रम

1–कलम रोक कर (मूल भूमिका) 9

2–कीर्तिर्यस्य स जीवति 11

3–जीवन–झाँकी

– राजनीति के प्रांगण में

– हिन्दू महासभा में

– केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में

– जनसंघ के माननीय अध्यक्ष

– जम्मू प्रस्थान

– सूर्यास्त

4–महान् व्यक्तित्व 39

5–डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी : चरित्र विश्लेषण 41

6–ऐतिहासिक भाषण : पंचम आर्यमहासम्मेलन (दिल्ली, 20–22 फरवरी1944) 47

7–साँची विहार का उद्घाटन भाषण (30 नवम्बर 1952) 55

8–अन्तिम महत्त्वपूर्ण प्रेस वक्तव्य (जालन्धर,10 मई 1953) 57

9–एक भयंकर चेतावनी (अमृतसर,10 मई 1953) 61

10–पठानकोट से जम्मू की ओर 63

11–कश्मीर की उलझन 68

12–लो श्रद्धांजलि हे राष्ट्रपुरुष !! 85

13–पं. नेहरू की श्रद्धांजलि और सत्याग्रह समाप्त कर देने सम्बन्धी वक्तव्य 93

14–यह मृत्यु है या हत्या ? 97

– निष्पक्ष जाँच हेतु शोकाकुल राष्ट्र की समवेत माँग

15–भारतीय जनसंघ की कार्यकारिणी का महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव 107

16–निष्पक्ष जाँच की माँग पर टालमटोल 109

17–प्रश्न जो अनुत्तरित रहे 115

– पं. नेहरू के साथ श्रीमती जोगमाया देवी का पत्र–व्यवहार

(हिन्दी अनुवाद एवं मूल अँगरेज़ी में भी प्रस्तुत)

18–व्यथा–कथा लिखी आँसू में कलम भिगोय 131

19–"...उसे कश्मीर में मार दिया गया" 13

– श्रीमाँ (श्री अरविन्द आश्रम) और भक्तों के मध्य चर्चा

20–एक ऐतिहासिक क्षण 13

– माधोपुर में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी की मूर्ति स्थापित

21–श्रीनगर में पुनः श्यामाप्रसाद 14

– श्रीनगर में डॉ. मुखर्जी का बलिदान दिवस

22–डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी (जीवन परिचय) 14

23–कविताएं 15

– जीवन–प्राण गया

– कुरबानियाँ कबतक ?

कलम रोक कर

कश्मीर के सम्बन्ध में कलम उठाने का विचार मेरा अभी बिल्कुल भी नहीं था। मैं तो गोहत्या–सम्बन्धी पुस्तक लिख रहा था, अचानक ही कश्मीर में हुई इस हत्या को सुनकर मैं हिल उठा। राष्ट्र का एक अनुभवी कर्णधार चल बसा, देश का एक निर्भीक सेनानी चल बसा, भारत के सिंहद्वार कश्मीर का सजग सन्तरी सदा को सो गया। बहुत चाहा उस अधूरी पुस्तक को पूरा कर लूँ, पर कहाँ ? जब कोने–कोने से तो सिसकियाँ उठ रही थीं फिर लेखनी किसी दूसरी ओर चलती भी कैसे ? उस महान पुरुष की स्मृति में कुछ विचारों का संकलन कर श्रद्धांजलि अर्पित करने की लालसा तीव्र हो उठी। प्रभु हमारे भारत देश को वह सामर्थ्य प्रदान करें जो इसके नेताओं में इस महाबलिदान के पश्चात् मित्र को मित्र और शत्रु को शत्रु समझने की सुबुद्धि जागृत हो सके। बहुत समय से अभारतीय अल्पमत ने इस देश पर अपना आधिपत्य रखा, अब तो अपनों की आड़ में उनके अरमान न उभर सकें।

डॉक्टर मुखर्जी के प्रति अपनी छात्रावस्था से ही मैं प्रभावित रहता आया हूँ। पर यह मेरा अभाग्य रहा जो निरन्तर कुछ समय तक साथ रहकर उनका अध्ययन मैं न कर सका। उनके सम्बन्ध में जो भी विशेष सामग्री उपलब्ध हो सकी है, वह भारतीयता के अद्‌भुत उपासक बन्धुवर श्री राममोहनजी, बी.कॉम. का ही परिश्रम है। एक तरह से यह पुस्तिका उनकी प्रेरणाओं का ही मूर्त्त रूप है।

आभार-प्रदर्शन

उनके जीवन के तिथिवार घटनाक्रम एवं विशेष ज्ञातव्य विषयों में 'पांचजन्य' एवं 'सरस्वती' आदि पत्र–पत्रिकाओं से जो कुछ सामग्री मिली है, उसके लिए उनका आभार–प्रदर्शन करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है। सार्वदेशिक सभा कार्यालय के मुख्य कार्यकर्त्ता श्री पं. रघुनाथप्रसादजी पाठक ने पंचम आर्य महासम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण भेजकर पुस्तक का गौरव बढ़ाने में मेरा सहयोग किया है। प्रिय भाई ब्रजनन्दन गोयल ने उर्दू पत्रों में प्रकाशित आवश्यक समाचारों से मुझे समय–समय पर परिचित कराया है। मेरे सम्माननीय बन्धु कलाकार श्री प्रकाशार्यजी, हैदराबाद हमारे प्रकाशनों का मुखपृष्ठ बनाकर विचारों को जीवन्त करने में सिद्धहस्त हैं। मैं इन सभी महानुभावों का हृदय से आभार मानता हूँ।

रामाकृष्ण प्रेस, देहली के व्यवस्थापक श्री बा. भगवतीप्रसादजी जिस आत्मीयता से प्रकाशन कार्य में सहयोग देते हैं उसके लिए मैं उनका भी धन्यवाद देता हूँ।

आशा है, भविष्य में भी इन सब सहयोगों को प्राप्त कर सकने की क्षमता हममें बनी रहेगी। ईश्वर हमें बल दें, यही प्रार्थना है।

–प्रकाशवीर
चन्दौसी (मुरादाबाद)

कीर्तिर्यस्य स जीवति

जिसका यश अमर है वह सदा जीवित रहता है

राष्ट्रमन्दिर के निर्माण में देशभक्तों के जीवन लगते हैं, राष्ट्रीय इतिहास की पंक्तियाँ काली स्याही से नहीं, राष्ट्रप्रेमियों के गरम–गरम लहू से लिखी जाती हैं। संस्कृति का भव्य प्रासाद जीवनयज्ञ की आहुतियों में ही मूर्त्त रूप लेता है। लाठी प्रहार, गोलियों की वर्षा, फाँसी के तख्ते, जेल की दीवारें, नृशंस हत्याएँ और पावन बलिदान, साधना की राह में खड़े हुए वह मील के पत्थर हैं जहाँ अमर हुतात्माएँ खड़ी मुस्करा रही हैं और बढ़े चलो! बढ़े चलो!! के प्रेरणा भरे वाक्यों से भारती का अधूरा मन्दिर, जिसकी नींव में दयानन्द–तिलक–गोखले और मालवीय जैसे महान व्यक्तित्वों की झलक पहले से ही दिखाई देती थी वह नरकेसरी मुखर्जी का बलिदान लेकर भी अपने कोटे को पूर्ण नहीं कर पाया है। अभी न जाने इसके निर्माण में कितने शहीदों के खून का गारा, कितने स्वदेशाभिमानियों के शरीर की ईंटें, कितनी ही खाली गोद और उजड़े सुहागवाली देवियों की दर्दनाक आहों की गर्मी भारतमाता के मोहक मन्दिर–निर्माण में लगनी शेष है। जबतक भगवती भागीरथी की लहरों में क्रान्ति के गान हैं, जबतक नगराज हिमालय के शिखरों में आहुति की आवाजें हैं, जबतक सिन्धु की सभ्यता अपनों के लिए बिलख रही है, जबतक हिन्द महासागर की उत्ताल तरंगें गरज–गरज कर अपनी आतुरता व्यक्त कर रही हैं तबतक शान्ति और सन्तोष की साँसें लेना क्या सम्भव है ? असम्भव ! और महा असम्भव !! जबतक इस सात्विकता की मूर्त्ति भारत माँ की विशाल बाहु बंगाल और पंजाब त्रस्त हैं, जबतक इसके सुदृढ़ स्कन्ध सीमा प्रान्त और सिन्ध इससे अलग हैं, जबतक इस भव्य मन्दिर का स्वर्णिम कलश कश्मीर इसके मस्तक पर पूर्णरूपेण नहीं है, जबतक इसके चरणों की प्रारम्भिक सीढ़ियों पर दक्षिण में पुर्तगाल और फ्रांस की बन्दूक रखी है और कोढ़ में खाज की तरह जबतक इसके अन्दर भी कुछ की आँखें इसके घण्टे और घड़ियाल तोड़ने पर लगी हुई हैं तबतक कैसे हर्षविभोर होकर माँ भारती के पुजारी कह सकते हैं –

हँस-हँस के राष्ट्र माँ की उतारेंगे आरती ?

इन्हीं राष्ट्रीय यज्ञ के साहसी साधकों में महामानव नरकेसरी डॉ. श्यामाप्रसाद

मुखर्जी का भी अपना एक विशिष्ट स्थान था। भारतीय राजनीति का यह प्रकाण्ड पण्डित निरंकुश अब्दुल्लाशाही ने देखते–ही–देखते बड़ी निर्दयता के साथ हमारे हाथों से छीन लिया। भारतीय शासकों की छत्रछाया में कलतक पाली जा रही कश्मीर राज्य के इस टुकड़े की भाग्यविधायिनी शेख सरकार जो अबतक न जाने कितने इस स्वर्गीय भूमि कश्मीर की आत्मा की रक्षा करनेवाले को अपनी गोली का निशाना बना चुकी थी, वह भारत और भारतीयता के गौरव डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को जीवित पकड़ेगी और मृतक की हालत में लौटायेगी, यह स्वप्न में भी किसी को आशा नहीं थी। कुछ साल पूर्व महाराज हरिसिंह ने भी जवाहरलालजी को इसी तरह पकड़ा था पर कुछ घण्टे नज़रबन्द रखकर भारत की सीमा में छोड़ दिया, लेकिन शेख अब्दुल्ला और उनकी सरकार ने भारत के इस शेर को दहाड़ते हुए पिंजरे में बन्द किया और कुछ दिन बाद संज्ञाशून्य हालत में उसकी लाश कलकत्ते में उस वृद्धा माँ की गोद में लाकर पटक दी।

आज जन्मदायिनी वीरप्रसविनी माता जोगमाया की ही गीली आँखें और गरम आहें श्याम नहीं माँग रहीं, आचार्य श्यामजी पाराशर के शब्दों में भारत माँ भी अपना श्याम माँग रहीं; क्योंकि भारत का वह शेर जिसकी गर्जना से अब्दुल्लाशाही के दिल दहल उठते थे, जिस रणकेसरी के ध्यानमात्र से कबरों में पड़ी जिन्ना और लियाकत की लाशें भी त्राहिमां–त्राहिमां पुकार उठती थीं, सैकड़ों मील की दूरी से जिस तेजस्वी स्वरूप की एक झलक मात्र देख लेने पर पाकिस्तानी पिशाचों की पाप पूर्ण आत्मा कम्पायमान हो उठती थी, आज वह शेर हमारे बीच में नहीं है। भावी भारत की आस – श्यामाप्रसाद मुखर्जी ? निराशा के तिमिर में आशा का प्रकाश – श्यामाप्रसाद मुखर्जी ? सुभाष के पश्चात् भारतीय जनता की शुभ आशा, श्यामाप्रसाद मुखर्जी ? आज हमारे बीच में नहीं है।

वह हमें छोड़कर नहीं गया; क्योंकि वह हमें छोड़कर कभी जा ही नहीं सकता था। वह हमें छोड़ने नहीं आया था। वह तो हमें निरंकुश स्वेच्छाचारी डिक्टेटरों के चंगुल से छुड़ाने आया था। खण्ड–खण्ड भारत को वह फिर से अखण्ड बनाने आया था। भारतमाता के शीश मुकुट की मुक्तामणि कश्मीर को वह नूतन आभा प्रदान करने आया था। ''विषकुम्भं पयोमुखम्'' रूपी शेख के मायामय स्वरूप से हताश बाबा अमरनाथ, क्षीर भवानी, अक्षय बल, मार्त्तण्डेश्वर तथा अनन्तनाग को वह आशा बँधाने आया था। अपने इस पवित्रतम मनोरथ को पूर्ण किये बिना वह जा नहीं सकता था। हमारी आत्मा हमें भीतर से पुकार–पुकारकर कह रही है–हमारा श्याम स्वयं नहीं गया। बलपूर्वक तथा छलपूर्वक उसे जान–बूझकर हमसे दूर भेजा गया है। मायामय शेख ने भारत की अमानत में खयानत की है। भारतमाता अब्दुल्ला से अपना श्याम माँगती है।